

श्राद्ध: परंपरा से परे श्रद्धा, स्मृति और शुभभावना का आध्यात्मिक पर्व

'श्राद्ध' में छिपा है अक्सर वह भाव 'श्रद्धा'
शब्द का मूल ही 'श्रद्धा' है। अर्थात् प्रेम, सम्मान, कृतज्ञता और विश्वास के साथ स्मरण करना। हमारे पूर्वज भले ही देह रूप में हमारे बीच न हों, लेकिन उनके दिए संस्कार, शिक्षाएं, मूल्य और जीवन की स्मृति आज भी हमारे साथ है।

इसलिए श्राद्ध केवल दिवंगत आत्माओं को याद करने का दिन नहीं, बल्कि उनके प्रति अपने मन में कृतज्ञता जगाने का अवसर है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारा वर्तमान अनेक पूर्वजों की जीवन-यात्रा और संस्कारों की नींव पर खड़ा है।

तथा पितरों से हमारा कर्मा संबंध है?
आध्यात्मिक दृष्टि से आत्मा एक स्वतंत्र सत्ता है और अपने कर्मों की जिम्मेदार भी स्वयं है। कर्म का सिद्धांत स्पष्ट करता है कि प्रत्येक आत्मा अपने कर्मों के अनुसार फल प्राप्त करती है। इसलिए किसी के कर्मों का हिस्सा-किताब केवल किसी कर्मकांड के माध्यम से समाप्त नहीं किया जा सकता।

फिर भी हमारे आपसी संबंध केवल देह तक सीमित नहीं होते। परिवार और समाज में अनेक प्रकार के कर्म-संबंध बनते हैं। प्रेम, सेवा, सहयोग, संस्कार और भावनाओं के माध्यम से बने ये संबंध हमारे जीवन-यात्रा को प्रभावित करते हैं।

इसलिए श्राद्ध को पितरों के कर्मों को बदलने के प्रयास के रूप में नहीं, बल्कि उनके प्रति शुभभावना और कृतज्ञता

व्यक्त करने के अवसर के रूप में देखना अधिक आध्यात्मिक है।

तर्पण से उनके पुनः संतुष्टि का तर्पण
परंपरा में पितरों के निमित्त तर्पण, भोजन, दान और सेवा का विशेष महत्व है।



इनका उद्देश्य श्रद्धा, सेवा और कृतज्ञता की भावना को अभिव्यक्त करना भी है। राजयोग की दृष्टि से हम एक और सुंदर अर्थ समझ सकते हैं- आत्मा का वास्तविक पोषण केवल भौतिक पदार्थों से नहीं, बल्कि शान्ति, प्रेम, पवित्रता और शक्ति जैसे आत्मिक गुणों से होता है।

इसलिए श्राद्ध के अवसर पर कुछ क्षण शांति लेकर पूर्वजों का स्मरण करें और मन में संकल्प लें - "आपके प्रति मेरे मन में केवल प्रेम और कृतज्ञता है। आपकी आत्मा शान्ति, शक्ति और सुख का अनुभव करें। मैं आपके श्रेष्ठ संस्कारों को

अपने जीवन में धारण करूंगा।"

यही शुभ संकल्प हमारे भीतर भी शान्ति और सकारात्मकता का संचार करता है।

सच्चा श्राद्ध उनके संस्कारों को

भारतीय संस्कृति में श्राद्ध केवल एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि अपने पूर्वजों के प्रति श्रद्धा, कृतज्ञता और आत्मिक संबंधों को स्मरण करने का अवसर है। श्रावण मास के बाद आने वाला पितृपक्ष हमें यह सोचने का अवसर देता है कि जिन आत्माओं ने हमारे जीवन और संस्कारों को आकार दिया, उनके प्रति हमारी वास्तविक जिम्मेदारी क्या है? क्या केवल कर्मकांड और तर्पण से पितरों को शान्ति मिल सकती है, या हमारे शुद्ध संकल्प, श्रेष्ठ कर्म और शुभभावनाएं ही सच्चा श्राद्ध हैं? आध्यात्मिक दृष्टि से देखें तो श्राद्ध हमें अतीत को सम्मान देकर वर्तमान को श्रेष्ठ बनाने की प्रेरणा देता है।

आपको प्रेम और शुभभावना के साथ स्मरण करता है।" ऐसा करने से मन का बोझ हल्का होता है और संबंधों में शान्ति का अनुभव होता है।

श्राद्ध: मृतकों से अधिक जीवितों का संस्कार
श्राद्ध हमें केवल पितरों की याद नहीं दिलाता, बल्कि अपने वर्तमान जीवन को भी देखने की प्रेरणा देता है। क्या हमारे कर्म श्रेष्ठ हैं? क्या हम आने वाली पीढ़ी को अच्छे संस्कार दे रहे हैं? क्योंकि एक दिन हम भी किसी के पूर्वज कहलाएंगे। तब हमारे लिए सबसे बड़ी श्रद्धांजलि क्या होगी? यही कि हमारे बाद आने वाले लोग हमारे नाम से अच्छे संस्कार, श्रेष्ठ कर्म और प्रेम की विरासत को याद करें।

विश्व की सभी आत्माओं के लिए पुनर्जागरण
श्राद्ध का भाव केवल अपने परिवार तक सीमित न रहकर व्यापक भी हो सकता है। हम सभी दिवंगत आत्माओं के प्रति शान्ति और शुभभावना के संकल्प कर सकते हैं - "हर आत्मा शान्ति का अनुभव करें, हर आत्मा अपने जीवन की यात्रा में शक्ति और सुख प्राप्त करें।" यही भावना श्राद्ध को कर्मकांड से उठाकर आध्यात्मिक साधना बना देती है।

श्राद्ध का आध्यात्मिक सार
सच्चा श्राद्ध केवल तिथि विशेष पर किया जाने वाला अनुष्ठान नहीं, बल्कि श्रद्धा से शुभभावना, शुभभावना से श्रेष्ठ कर्म और श्रेष्ठ कर्म से श्रेष्ठ संस्कारों की यात्रा है।



शान्तिवन-आबू रोड(राज.)। ब्रह्मकुमारीज संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दावी प्रकाशमणि की 19वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में 21 से 25 अगस्त तक संस्थान के शान्तिवन स्थित विशाल व्यंगमंड हॉल में आयोजित स्कंदन महाभियान के शुभारम्भ दौरान उपस्थित रहे संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा, आबू रोड एसडीएम रामस्वरूप जोहार, अतिरिक्त महासचिव राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय, ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ. प्रताप मिश्रा, अग्रवाल समान अग्रवाल समग्रमल अग्रवाल, समान सेवा प्रभाग उपाध्यक्ष राजयोगी ब्र.कु. अनंतार, राजयोगी ब्र.कु. मोहन सिंघान, ब्र.कु. देव, ब्र.कु. जगदीश, ब्र.कु. वैक अधिकारी डॉ. सपना, ब्र.कु. वैक अधिकारी धर्मेश सिंह, ब्र.कु. ईवी गिरेश, समाज सेवा प्रभाग के मुख्यालय संपादक ब्र.कु. वीरेंद्र एवं शिक्षक ईश्वर सिंह। शिफर के दौरान 401 लोगों ने स्कंदन किया।



वर्धा-महाराष्ट्र। रक्षाबंधन पर्व के अवसर पर लायन्स क्लब गांधी सिटी और ब्रह्मकुमारीज के संयुक्त स्वरसंघा संगीत कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी, लायन्स क्लब गांधी सिटी के संचालक अनिल नरेडो, कला महोत्सव के अध्यक्ष संदीप चिचोटे, मयूर महाराज, लायन्स क्लब अध्यक्ष अतुल रुईकर, उपाध्यक्ष आशीष पोहाणे, सचिव मनोज तेलहाडे, कोषाध्यक्ष सुरेश बरे, गायिका खुशबू कठाने तथा अन्य अतिथिगण।



न्यू पलासिया-इंदौर(म.प्र.)। सीमा सुरक्षा बल एवं सेंट्रल स्कूल ऑफ वेपर्स में रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में सीमा सुरक्षा बल के जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्रह्मकुमारीज धार्मिक प्रभाग जोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण, ब्र.कु. प्रमिला, सीमा सुरक्षा बल निरीक्षक नीरज श्रीवास्तव तथा अन्य।



बोडसर-ईरट विराज(महारा.)। रक्षाबंधन पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए मुंबई विले पाले सेवाकेन्द्र संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. योगिनी दीदी।



वाशी-नवी मुंबई(महारा.)। रक्षाबंधन पर्व पर मेट्रोपॉलिटन कॉमिश्नर डॉ. कैलाश शिंदे को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शोभा दीदी। साथ है अन्य ब्रह्मकुमारी बहनें।



मंगोत्री विहार-इंदौर(म.प्र.)। रक्षाबंधन पर्व एवं 10 करोड़ नशा मुक्ति प्रतिज्ञा महाअभियान के अंतर्गत बरजी नशा मुक्ति केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में डॉ. शुभांशु अवस्थी, काउंसलर, राकेश शर्मा, पीयर काउंसलर, रिकू दुआ, सुपरवाइजर, सुश्री प्रियंका शुक्ला, कोऑर्डिनेटर, संजय पारसनीया, पैरामेडिकल स्टाफ, इन हाउस को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सीमा।



घाटकोपर-मुंबई(महारा.)। प्रवीण छेड, भाजपा सचिव को रक्षासूत्र बांधते हुए उपक्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी।



बिलासपुर-निराला नगर(छ.ग.)। कलेक्टर संजय अग्रवाल को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. स्वाति।



राजनांदगांव-छ.ग.। जिला पुलिस अधीक्षक अंकिता शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. पुष्पा।